بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 14 मार्च 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

क़ुरान-ए-करीम, अहादीस-ए-नबवी ﷺ और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कथनों की रौशनी में क़ुरआन-ए-करीम के महत्त्व, महानता एवं बरकतों का विवेक पूर्ण एवं उत्साह जनक वर्णन।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-14.03.2025

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अल्लाह तआला की कृपा से हम रमज़ान के दूसरे दशक में से गुज़र रहे हैं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम का रमज़ान से एक विशेष सम्बन्ध बयान फ़रमाया है। फ़रमाया- यह रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन मानव जाति के लिए एक महान मार्ग दर्शक के रूप में उतारा गया तथा ऐसे खुले निशानों के रूप में जिनमें हिदायत का विवरण तथा सत्य एवं असत्य में भेद कर देने वाली बातें हैं। अतएव इस कारण से हमें इस महीने में अधिकता के साथ क़ुरआन को पढ़ने की ओर ध्यान दिलाया गया है।

इस युग में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. ने भी ध्यान दिलाया है और आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसकी ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाया है कि इस बरकत वाले महीने में तो अधिकता से क़ुरआन को पढ़ना चाहिए। हज़रत जिब्राईल अलै. प्रति वर्ष जितना क़ुरआन अवतरित हुआ करता था, उसका एक दौर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पूरा किया करते थे और आँहज़रत स. के जीवन के अन्तिम वर्ष में तो दो बार दौर पूरा किया।

क़ुरआन करीम का महत्त्व और रमज़ान के साथ इसका सम्बन्ध अत्यधिक है, इस बात को हमें सदेव याद रखना चाहिए और क़ुरआन करीम को पढ़ने एवं सुनने का प्रयास करना चाहिए। हमारी मस्जिदों में क़ुरआन और हदीस के दर्स की व्यवस्था होती है, तरावीह की भी व्यवस्था होती है,

क़ुरआन की तिलावत पर ज़ोर दिया जाता है, एम.टी.ऐ. पर भी प्रतिदिन तिलावत आती है, उसको भी सुनना चाहिए। परन्तु क़ुरआन की वास्तविक बरकतें तब ही मिल सकती हैं जब इसको सुन कर इसके अनुकूल काम भी किया जाए। अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम के शुरू में ही फ़रमा दिया है कि यह वह किताब है जिसमें कोई सन्देह नहीं, मुत्तक़ियों को हिदायत देने वाली है। अतः तक़वा पर चलने के लिए और एक वास्तविक मोमिन बनने के लिए अल्लाह तआला ने इस किताब के अनुसार कर्म करना अनिवार्य किया है। रमज़ान में तो वास्तविक मोमिन बनने की ओर विशेष ध्यान होता है, तक़वा को प्राप्त करने का विशेष प्रयास हो रहा होता है, तो उसकी विधि अल्लाह तआला ने समझा दी है कि यदि यह प्रयत्न एवं इच्छा है तो क़ुरआन करीम को अधिकता से पढ़ो तथा इसके अनुसार काम करो।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- इस (क़ुरआन करीम) के लाभ एवं बरकतों का दर सदेव जारी है तथा वह हर ज़माने में उसी प्रकार स्पष्ट एवं ताज़ा है जिस तरह आँहज़रत स. के ज़माने में था। अतः रमज़ान में जहाँ हम क़ुरआन करीम को पढ़ने की ओर विशेष ध्यान देते हैं वहीं इसकी शिक्षाओं पर भी अमल करने की कोशिश होनी चाहिए। रमज़ान में हर कोई अपने अपने सामर्थ्य के अनुसार क़ुरआन करीम को पढ़ता है, जो इसको पूरा पूरा नहीं भी पढ़ सकते वे भी इसका कुछ न कुछ भाग रमज़ान के दिनों में पढ़ने की चेष्टा करते हैं। वैसे तो हरएक को रमज़ान में क़ुरआन करीम का कम से कम एक दौर पूरा करने की अवश्य कोशिश करनी चाहिए, इसी तरह क़ुरआन करीम का अनुवाद एवं तफ़सीर पढ़ने की ओर भी ध्यान होना चाहिए, इस प्रकार कि हमें भलाई और बुराई का सटीक ज्ञान हो।

कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि क़ुरआन करीम अति कठिन पुस्तक है, जबकि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए सरल बनाया है, अतएव क्या कोई है नसीहत पकड़ने वाला। यह अल्लाह तआला का दावा है, वह फ़रमाता है कि मैंने क़ुरआन करीम में सुविधा जनक शिक्षा दी है। तुम्हें नसीहत यह है कि इसकी शिक्षानुसार काम करने का भरसक प्रयास करो। ख़ुदा तआला ने क़ुरआन करीम को समझने के लिए हर एक युग में अध्यापक भी पैदा किए तथा इस युग में उसने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. को भेजा, जिन्होंने हमें सब कुछ बता दिया। अतएव यह हमारा दुर्भाग्य होगा यदि अब भी हम इस पर अमल करने वाले न बनें।

इसी तरह खुलफ़ा ने भी तफ़सीरें लिखी हैं, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने तफ़सीरे कबीर लिखी है, जिसमें आधे क़ुरआन की व्याख्या तो बयान हो गई है, इसके अतिरिक्त अन्य अनुवाद एवं तफ़सीरें हैं, तफ़सीरे सगीर है, इसमें भी अनेक बातें हैं। फिर जमाअत में विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हो रहे हैं, अतः रमज़ान में जहां हम क़ुरआन करीम को पढ़ने का प्रयास करते हैं, वहां अनुवाद एवं तफ़सीर के साथ इसके अभिप्रायः एवं आदेशों को भी समझने तथा इन पर अमल करने का हमें प्रयास करना चाहिए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि बच्चों की आमीन के लिए लोग मेरे पास आते हैं, उन्हें भी याद रखना चाहिए कि बच्चों को क़ुरआन पढ़ा कर आपने अपना एक कर्तव्य तो पूरा कर दिया किन्तु बच्चों में क़ुरआन करीम की तिलावत तथा उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने का उत्साह एवं लगन पैदा करना भी आपका कर्तव्य है, अतः इसकी तिलावत एवं अनुवाद की ओर ध्यान दें।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने एक स्थान पर फ़रमाया कि यह सच है कि अधिकांश मुसलमानों ने क़ुरआन करीम को छोड़ दिया है, परन्तु फिर भी इसकी किरणें, बरकतें एवं इसके सद्‌गुण सदेव जीवंत एवं ताज़ा तथा बिलकुल नए हैं, अतः मैं इस समय सबूत के लिए भेजा गया हूँ। फ़रमाया- क़ुरआन करीम को छोड़ कर सफलता एक असम्भव तथा अनहोनी बात है और ऐसी सफलता एक काल्पनिक बात है जिसकी खोज में ये लोग लगे हुए हैं।

आँहज़रत स. ने फ़रमाया कि जो मोमिन क़ुरआन पढ़ता है तथा उसके अनुसार काम भी करता है, उसका उदाहरण एक ऐसे फल की भांति है जिसका स्वाद भी अच्छा है और सुगन्ध भी, और वह मोमिन जो क़ुरआन नहीं पढ़ता किन्तु उसके अनुसार अमल करता है उसका उदाहरण खजूर की भांति है, जिसका स्वाद तो अच्छा है किन्तु सुगन्ध नहीं है तथा ऐसा मुनाफ़िक़ या पाखंडी जो क़ुरआन करीम पढ़ता है उसका उदाहरण ऐसे पौधे की भांति है जिसकी सुगन्ध तो अच्छी है किन्तु स्वाद कड़वा है और ऐसे पाखंडी का उदाहरण जो क़ुरआन नहीं पढ़ता ऐसे कड़वे फल की भाँती है जिसका स्वाद भी कड़वा है और जिसकी सुगन्ध भी कड़वी है।

एक रिवायत में आता है कि नबी करीम स. ने फ़रमाया कि लोगों में से कुछ अल्लाह वाले लोग होते हैं, रावी कहते हैं कि हम ने आप स. पूछा कि ख़ुदा वाले कौन होते हैं? आप स. ने फ़रमाया कि क़ुरआन वाले लोग अहलुल्लाह और ख़ुदा के विशेष भक्त होते हैं, अर्थात क़ुरआन को पढ़ने वाले और उसपर अमल करने वाले। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि सफल वही लोग होंगे जो क़ुरआन करीम के अनुसार चलते हैं।

मुसलमानों के जो इस समय हालात हैं, हर दिशा में उपद्रव है, शासक जनता से लड़ रहे हैं तथा जनता सरकारों पर आक्रमणकारी है, यह सब क़ुरआन को छोड़ने का परिणाम है। कहने को तो दोनों के हाथों में क़ुरआन है किन्तु दोनों ही क़ुरआन की शिक्षाओं से दूर हैं। यदि क़ुरआन करीम पर अमल करने वाले हों तो कदाचित ये बातें न हों। इस ज़माने में ख़ुदा ने जो अपना प्रतिनिधि भेजा है उसका इन्कार किए बैठे हैं, उसको मानने को तय्यार नहीं, तो ऐसी अवस्था में ये क़ुरान से लाभ कदाचित नहीं उठा सकते।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- याद रखो! क़ुरआन करीम वास्तविक बरकतों का स्रोत एवं मुक्ति प्राप्त करने का सच्चा माध्यम है। यह उन लोगों की अपनी ग़लती है जो क़ुरआन पर अमल नहीं करते ..... अब भी उनके लिए आवश्यक है कि वे इस स्रोत को महान नेमत समझें और इसके महत्त्व को समझ कर क़दर करें और इसकी क़दर यही है कि इस पर अमल करें और फिर देखें कि ख़ुदा तआला किस तरह इनकी कठिनाइयों एवं दुविधाओं को दूर कर देता है।

मुसलमानों की तो ऐसी स्थिति है कि क़ुरआन करीम की शिक्षाओं से दूर जा पड़े हैं, क़ुरआन करीम को इन्होंने छोड़ा हुआ है, इस पर अमल नहीं करते और क़ुरआन करीम से प्रेम करने का केवल दावा करते हैं। पाकिस्तान में इन्होंने अहमदियों के क़ुरआन पढ़ने पर पाबन्दी लगाईं हुई है और स्वंय इन्होंने इस पर अमल करना नहीं, अहमदियों पर जितनी चाहे पाबन्दी लगा लें, यह क़ुरआन की शिक्षाओं को हमारे दिलों से निकाल नहीं सकते, ये जितना चाहे ज़ोर लगा लें, इसकी मुहब्बत हमारे दिलों से निकाल नहीं सकते।

अतः इस ज़माने में सबसे बड़ा दायित्व अहमदियों का है, अहमदी मुसलमानों का कर्तव्य है कि वे क़ुरआन पर अमल करें ताकि गैर इसलामी दुनिया इनके अमल को देख कर समझ सके कि वास्तविक इसलामी शिक्षा क्या है और क़ुरआन करीम के आदेश क्या हैं। यह अमन, सलामती, मुहब्बत और प्यार के निर्देश हैं, ये समाज में बन्धुत्व फैलाने के आदेश हैं, ये प्राणियों के अधिकारों को अदा करने के आदेश हैं, अतः इस ओर अहमदियों को अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

एक रिवायत में आता है कि एक बार जीब्राईल अलै. आँहज़रत के पास आए और फ़रमाया कि निकट भविष्य में अनेक उपद्रव पैदा होंगे। पूछा गया कि इन उपद्रवों से निकलने की क्या सूरत होगी? जिब्राईल अलै. ने कहा कि इन उपद्रवों से निकलने का मार्ग अल्लाह की किताब है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि हमें अपने आपको और अपनी संतानों को बचाने के लिए अल्लाह की किताब की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है, तभी हम हिदायत भी पा सकेंगे तथा उपद्रव एवं कठिनाईयों से बच भी सकेंगे और उन आदेशों को भी समझ सकेंगे जो अल्लाह तआला ने हमारे लिए नाज़िल फ़रमाए हैं।

नबी करीम स. ने फ़रमाया- क़ुरआन को प्रत्यक्ष रूप में पढ़ने वाला, प्रत्यक्ष दान देने वाले की भाँती है और क़ुरआन को छिपा कर पढ़ने वाला छिपा कर दान करने वाले की भांति है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि हमें याद रखना चाहिए कि यह भी रिवायत में लिखा है कि दान देना, बलाओं, ख़तरों तथा फ़ितनों को दूर करता है। अतः क़ुरआन करीम को पढ़ना एवं इस प्रकार पढ़ना कि समझ में भी आ रहा हो, यह दान की तरह क़ुबूल होगा और इसकी बरकतों से इंसान हर एक फ़ितने से बचा रहेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि यदि दिल कठोर हो तो उसको दयालु बनाने की विधि यही है कि क़ुरआन करीम को बार बार पढ़े, जहां जहां दुआ होती है वहां मोमिन का दिल भी चाहता है कि यही अल्लाह की रहमत मुझ पर भी हो। क़ुरआन करीम की उपमा एक उद्यान की है कि एक स्थान से इंसान किसी प्रकार का फल चुनता है फिर आगे चलकर एक अन्य प्रकार का फल चुनता है। अतः चाहिए कि हर एक स्थान के लाभान्वित होता रहे।

ख़ुत्ब: के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि रमज़ान के दिनों में जहां हम विशेषतः क़ुरआन करीम की ओर ध्यान दे रहे हैं, वहाँ चाहिए कि हम यह भी प्रतिज्ञा करें कि यह ध्यान देना हम सदेव करते रहेंगे और इसपर अमल करने की ओर भी हम ध्यान रखेंगे और अपने बच्चों को भी क़ुरआन पढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे। जब यह होगा तो हमारे जीवन सदेव सफल रहेंगे। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131